www.PapaCambridge.com

UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
General Certificate of Education
Advanced Subsidiary Level and Advanced Level

HINDI **8687/02**
9687/02

Paper 2 Reading and Writing

October/November 2005

1 hour 45 minutes

Additional Materials: Answer Booklet/Paper

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

If you have been given an Answer Booklet, follow the instructions on the front cover of the Booklet.
Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen on both sides of the paper.
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.
Dictionaries are not permitted.

Answer **all** questions.
Write your answers in **Hindi** on the separate answer paper provided.
You should keep to any word limits given in the questions.
At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

पहले नीचे दिए निर्देश पढ़िए

यदि आपको उत्तर–पुस्तिका दी जाती है तो उसके पहले पृष्ठ के निर्देशों का पालन करें ।
परीक्षा के लिए आप जो भी काम दें उस पर केन्द्र संख्या, छात्र संख्या और अपना नाम लिखें ।
गहरी नीली या काली स्याही वाले कलम से कागज़ के दोनों ओर लिखें ।
स्टेप्लर, पेपर क्लिप, हाइलाइटर, गोंद या करेक्शन–फ़्लुइड का प्रयोग न करें ।
शब्दकोष का प्रयोग मना है ।

सभी प्रश्नों के उत्तर दें ।
दी गई उत्तर–पुस्तिका में अपने उत्तर **हिन्दी** में लिखें ।
उत्तर, प्रश्नों में दिए गए शब्दों की संख्या तक ही सीमित रखें ।
परीक्षा के अंत में अपना सब काम सुरक्षित रूप से एक साथ बाँध दें ।
प्रत्येक प्रश्न या प्रश्न–अंश के अंत में उसके निर्धारित अंक कोष्ठकों [ ] में दिए गए हैं ।

This document consists of **5** printed pages and **3** blank pages.

UNIVERSITY of CAMBRIDGE

भाग 1

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

रेचल और पेनी की भारत की यात्रा

ब्रिटेन से अनेक विद्यार्थी विश्वविद्यालय में प्रवेश करने से पहले एक वर्ष का अवकाश लेकर विदेश जाते हैं। यह प्रथा लोकप्रिय है और गैप इयर (**Gap Year**) के नाम से प्रचलित है। ब्रिटेन में इस सांस्कृतिक आदान–प्रदान को सफल और सुरक्षित बनाने के लिए कई संस्थाएं स्थापित हो गई हैं जिनसे विदेशों के रहन–सहन, खान–पान, मिलने–मिलाने के तौर–तरीक़े और सामाजिक शिष्टाचार का ज्ञान मिलता है और माँ–बाप अपनी जिज्ञासा पूरी कर सकते हैं ।

इसी तरह दो विद्यार्थी, रेचल और पेनी ने भारत में जाकर काम करने का संकल्प पूरा किया । अगस्त 2000 में दोनों भारत के मध्यप्रदेश प्रांत के ग्वालियर शहर में 'रोशनी' नामक एक संस्था में काम करने गईं । ग्वालियर एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है परन्तु यहाँ अभी भी अनेक सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं । यहाँ मानसिक पक्षाघात (**Cerebral Palsy**) से ग्रस्त शिशु, बच्चे तथा वयस्कों के लिए न तो किसी प्रकार की कोई व्यवस्था थी न ही उनके माँ–बाप या उनकी देख–रेख करने वालों के लिए कोई सहारा या परामर्श की कोई सुविधा ही । इस भारी कमी को पूरा करने के प्रयास में एक कर्मण्यनिष्ठ महिला, मंजुला ने 1998 में 'रोशनी' की स्थापना की और इसका प्रचार विदेशों में किया । चंदों द्वारा इकट्ठे किये गये पैसों पर चलने वाली यह संस्था अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाती है ।

यह जानते हुए भी कि 'रोशनी' में रहने की व्यवस्था अच्छी नहीं, सोने के लिए पतली बेंच, स्वच्छ पानी का अभाव और कपड़े धोने की असुविधा है इन दोनों विद्यार्थियों ने अपना दृढ़ निश्चय नहीं बदला । दोनो छात्रायें वहाँ पहुँचकर 'रोशनी' के काम में पूरी तरह लग गईं । उन्होंने वहाँ के बच्चों को अँग्रेज़ी भाषा सिखाना और उनसे हिन्दी सीखना आरंभ कर दिया । केवल दो सप्ताह में बच्चों की कक्षा–गृहों को उनके मनपसन्द रंगों से रंग दिया और उनकी बनाई रंग–बिरंगी तस्वीरों से सजा दिया । बच्चों के साथ नियमित रूप से बाग़बानी करने और 'रोशनी' के प्रशासन में सहायता करने लगीं । इन्होंने कुछ ही हफ़्तों में 'रोशनी' की सभी आवश्यक सूचनाओं और बही–खातों को कमप्यूटर में दर्ज कर दिया और ई–मेल द्वारा आवश्यक पत्र–व्यवहार प्रारंभ कर दिया । इससे समय की बचत के साथ–साथ पत्रोत्तर तीव्र गति से आने लगे जिससे कार्यकर्ताओं को निर्णय लेने में सुविधा होने लगी ।

धीरे–धीरे इन्होंने शहर जाना आरंभ किया। अब तो उन्हें भारतीय भोजन में भी बड़ा चाव आने लगा – जैसे आलू–पूरी और और इडली–दोसा । शहर जाना, वहाँ सर्राफ़ा बाज़ार से चाँदी की पायल, चूड़ियाँ और हार ख़रीदना, छतरी बाज़ार से कपड़े ख़रीद कर दर्ज़ी से अपनी पसंद के नमूने के पोशाक और सलवार सूट सिलवाना एक नियम सा बन गया । उन्हें त्योहारों में आनंद आने लगा । वहीं की एक शिक्षिका के लड़के की शादी में दोनों छात्रायें रेशम और ज़री की साड़ियों, काँच की चूड़ियों, गजरा, बिन्दी आदि में ख़ूब फ़ब रही थीं । उस वातावरण में ये इतनी घुल–मिल गईं कि सभी को आश्चर्य होने लगा ।

भारत से वापस आकर दोनों ने ई–मेल द्वारा 'रोशनी' से संपर्क बनाये रखा है । हर वर्ष बच्चों के लिए खिलौने तथा पुस्तकों का पार्सल भेजती हैं और चंदा जमा करती हैं जिससे 'रोशनी' को विशेषज्ञों को बुलाने में सहायता मिलती है । अब तो 'रोशनी' और ब्रिटेन के बीच एक अटूट बंधन बन चुका है ।

www.PapaCambridge.com

www.PapaCambridge.com

1 नीचे दिए गये प्रत्येक परिभाषा के लिए उपरोक्त अनुच्छेद से उन शब्दों या उक्तियों को लिखिए जिनसे अर्थ स्पष्ट हो जाए ।

उदाहरण : कुछ स्वीकार करना और कुछ देना

उत्तर : आदान–प्रदान (para. 1)

(a) नियम या कायदा । (para. 1) [1]

(b) फैलाना । (para. 2) [1]

(c) दृढ़ निश्चय । (para. 3) [1]

(d) सुन्दर लगना । (para. 4) [1]

(e) कभी न टूटने वाला रिश्ता । (para. 5) [1]

[पूर्णांक : 5]

2 निम्नलिखित प्रत्येक शब्द या उक्तियों का प्रयोग करके, <u>अपने शब्दों में</u> ऐसे वाक्य बनाइए जिनसे उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए ।

उदाहरण : शिष्टाचार – नम्र व्यवहार (para. 1)

उत्तर : भारतीय शिष्टाचार के अनुसार गुरु–जनों का आदर किया जाता है ।

(a) जिज्ञासा (para. 1, line 4) [1]

(b) कर्मण्यनिष्ठ (para. 2, line 6) [1]

(c) कक्षा–गृहों (para. 3, line 4) [1]

(d) प्रशासन (para. 3, line 5) [1]

(e) विशेषज्ञों (para. 5, line 2) [1]

[पूर्णांक : 5]

3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर <u>अपने शब्दों में</u> दीजिए । अनुच्छेद के वाक्यों की <u>नकल न करें</u> ।
(प्रत्येक प्रश्न के अंत में अंकों की संख्या दी गई है । इसके अतिरिक्त आपके उत्तरों की भाषा और शैली के लिए 5 अंक निर्धारित किए गए हैं । पूर्णांक : 15 + 5 = 20)

(a) **गैप इयर (Gap Year)** को सफल बनाने के लिए क्या किया गया है और क्यों ? [2]

(b) 'रोशनी' की स्थापना कैसे और क्यों हुई ?
उसकी आवश्यकतायें पूरी न होने का क्या कारण है ? [3]

(c) रेचल और पेनी के प्रयासों से 'रोशनी' को क्या–क्या लाभ पहुँचे ? [4]

(d) यह कैसे पता चलता है कि ग्वालियर शहर दोनों लड़कियों के लिए एक अच्छा अनुभव था ? [3]

(e) ब्रिटेन और 'रोशनी' का अटूट संबन्ध कैसे बँधा हुआ है ? [3]

[पूर्णांक : 20]

भाग 2

अब द्वितीय गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

मनुष्य की खोज और भ्रमण की भावना

वातावरण को जाँचना, परखना और अनजान जगहों को खोजने की इच्छा मनुष्य की विशिष्टता है । खोज और भ्रमण की भावना उसकी जिज्ञासा और कल्पना से जुड़ी है । नहीं तो यह जानते हुए भी कि नए और अनजान स्थान आशंकाओं, युद्ध और संकट से ग्रस्त हैं मनुष्य क्यों उनकी खोज और जानकारी के लिए चल पड़ता है?

ईसा से 510 वर्ष पहले फ़ारसी राजा दारियस ने अपने एक अफ़सर को सिन्धु सभ्यता की खोज में भेजा था । यूनानी सम्राट सिकन्दर भी सिन्धु नदी के निचले स्थल तक पहुँच गए थे । इधर रोम राज्य की शक्ति बढ़ते ही पूर्व देशों की सुन्दर और अपूर्व वस्तुओं की माँग बढ़ी । इससे समुद्र के पूर्वी भागों में व्यापारिक कार्यक्रम ज़ोरों से शुरु हो गया । 1260 में 17 वर्षीय मार्को पोलो अपने घुमक्कड़ पिता और चाचा के साथ निकल पड़ा । चीन में कुबलाई खाँ के दरबार में उसे एक अधिकारी का पद मिला । सूक्ष्म और विस्तार विवरण तथा पूरा–पूरा ब्यौरा लिखने का निर्देश लेकर वह प्रसिद्ध नगरों, बन्दरगाहों और म्यानमार की सरहदों तक खूब घूमा । 1325 में इब्न बतूता मक्का की तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े थे। 30 वर्ष तक देश–विदेश घूमते रहे और 75000 मील का भ्रमण किया । भारतवर्ष के कोने–कोने में घूमकर ये अपनी यात्राओं का बहुत सजीव और सूक्ष्म विवरण छोड़ गए हैं ।

इतिहासकार कहते हैं कि खोज का अधिकतर इतिहास यूरोपीय रहा है इसलिए नहीं कि यूरोपवासियों में उत्कृष्ट जिज्ञासा या आन्तरिक शक्ति थी परंतु इसलिए कि तकनीकी विकास ने उनकी खोज और भ्रमण पर व्यय करने की शक्ति बढ़ा दी थी । उनके तीव्र गति से बढ़ते साम्राज्य संगठित होते ही उनको नई जगहों को खोजने, उनका उपयोग तथा शोषण का अवसर मिलने लगा । इसके विपरीत एशियायी साम्राज्यों ने अपने इर्द–गिर्द मज़बूत दीवारें चुनवाई तथा बाहर के बर्बरों से अपने बचाव के लिए राजनीतिक सीमाएं बना दीं ।

ये तो हैं इतिहासकारों की दलीलें । वास्तव में भारत से भ्रमण करने वाले बर्मा, चीन, लंका, स्याम, कंबोज, सुमात्रा, मलाया, बोर्नियो, वियतनाम और फिलिपीन तक गए थे। पूरे पश्चिमी–पूर्वी एशिया में भारतीय संस्कृति की छाप है । परंतु भारत में ऐसा समय आया जब यह मान्यता बन गई कि समुद्र में पाँव रखते ही अधर्म हो जाएगा । फिर क्या था? अधिकतर भारतवासी कूप– मंडूक बने रहे और सदियों तक बाहर से लोग आते रहे और देश का शोषण करते रहे ।

इसमें तो कोई संदेह नहीं कि खोज और भ्रमण करने से मनुष्य का अनुभव और ज्ञान बढ़ता है । एक दूसरे की संस्कृति को समझने की क्षमता मिलती है । आज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक और धार्मिक विकास व तकनीकी उन्नति तथा नए–नए आविष्कारों का श्रेय इसी को है ।

www.PapaCambridge.com

www.PapaCambridge.com

4 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए । अनुच्छेद के वाक्यों की नकल न करें ।

(प्रत्येक प्रश्न के अंत में अंकों की संख्या दी गई है । इसके अतिरिक्त आपके उत्तरों की भाषा और शैली के लिए 5 अंक निर्धारित किए गए हैं । पूर्णांक : 15 + 5 = 20)

(a) मनुष्य की क्या विशिष्टता है और यह सच क्यों है कि यह विशिष्ट भावना उसकी कल्पना से जुड़ी है ? [2]

(b) यह कैसे पता चलता है कि मार्को पोलो और इब्न बतूता दोनों ही बड़े घुमक्कड़ थे ? [3]

(c) इतिहासकारों के अनुसार खोज का अधिकतर इतिहास एशियायी नहीं बल्कि यूरोपीय रहा है । क्यों ? [4]

(d) भारतीय संस्कृति की छाप कहाँ है और क्यों ? [2]

(e) भारत में विदेश–भ्रमण की भावना क्यों कम हुई और इसका क्या प्रभाव हुआ ? [2]

(f) खोज और भ्रमण की भावना हमारे लिए एक वरदान क्यों है ? [2]

[पूर्णांक : : 20]

5 **(a)** उपरोक्त दोनों गद्यांशों, **रेचल और पेनी की भारत की यात्रा** और **मनुष्य की खोज और भ्रमण की भावना** को ध्यान में रखते हुए यह बताइए कि घूमना हमारे जीवन को किस तरह बेहतरीन बनाता है? [10]

(b) क्या आप गैप इयर (**Gap Year**) लेना चाहेंगी / चाहेंगे ? [5]

दोनों प्रश्नों के उत्तर [5 (a), (b)] 140 शब्दों की सीमा तक ही रखिए ।

[भाषा और शैली : : 5]

[पूर्णांक : : 20]

BLANK PAGE

www.PapaCambridge.com

BLANK PAGE

www.PapaCambridge.com

BLANK PAGE

www.PapaCambridge.com

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

University of Cambridge International Examinations is part of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of